Dr. Raj Gopal.
V.S.J. College
Rajnagar.

Basic features of Indian Philosophy (Lecture-7)

भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ (व्याख्यान-7)

(पुनर्जन्म सिद्धान्त)

चार्वाक को छोड़कर सभी दार्शनिक पुनर्जन्म सिद्धान्त में विश्वास करते हैं। पुनर्जन्म का अर्थ होता है पुनः पुनः जन्म ग्रहण करना। भारत के दार्शनिकों का मानना है कि संसार जन्म और मृत्यु की अनवरत श्रृंखला है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त, कर्मवाद सिद्धान्त एवं आत्मा की अमरता सिद्धान्त से प्रस्फुटित हुआ है। आत्मा को अपने कर्मों का फल भोगने के लिए जन्म ग्रहण करना पड़ता है। आत्मा की नित्य एवं अविनाशी होने के कारण शरीर के मृत्यु के पश्चात एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। मृत्यु का अर्थ शरीर का अन्त आत्मा का नहीं।

भारतीय दर्शन में पुनर्जन्म सिद्धान्त का विचार वैदिक काल से है जिसका पूर्ण विकास उपनिषद् में हुआ है। इसमें कहा गया है कि "अन्न की तरह मानव का नाश होता है और अन्न की तरह मानव का पुनर्जन्म भी होता है। गीता में पुनर्जन्म-सिद्धान्त की व्याख्या में कहा गया है कि-जिस प्रकार से मनुष्य पुराने वस्त्र के जीर्ण हो जाने पर नवीन वस्त्र को धारण करता है उसी प्रकार आत्मा वृद्ध एवं जर्जर शरीर को छोड़कर नवीन शरीर धारण करती है।

बुद्ध ने पुनर्जन्म की व्याख्या नित्य आत्मा के बिना किया है। जिस प्रकार एक दीपक की ज्योति से दूसरे दीपक की ज्योति को प्रकाशित किया जाता है, उसी प्रकार वर्तमान जीवन की अंतिम अवस्था से भविष्य जीवन की प्रथम अवस्था का निर्माण होता है।

Scanned with CamScanner

न्याय वैशेषिक दर्शन में पुनर्जन्म की व्याख्या नवजात शिशु के हंसने और रोने से की गयी है। शिशुओं का हंसना और रोना उनके पूर्व जीवन के अनुभवों का परिचायक है।

सांख्य-योग दर्शन के अनुसार आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश नहीं करती है। वे पुनर्जन्म की व्याख्या सूक्ष्म शरीर के आधार पर करते हैं। उनका मानना है सूक्ष्म शरीर ही स्थूल शरीर के नाश होने के पश्चात दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। मीमांसा और वेदांत दर्शन भारतीय परंपरा में निहित सामान्य पुनर्जन्म सिद्धान्त को स्वीकार करती है।

पुनर्जन्म सिद्धान्त के बारे में कहा जाता है कि मानव अपने पूर्व जन्म की अनुभूतियों को नहीं याद कर पाते हैं इसलिए यह सिद्धान्त पूर्णतः सत्य नहीं है। लेकिन यह आलोचना सही नहीं है हम वर्तमान जीवन में घटित बहुत सी घटनाओं को याद नहीं कर पाते हैं। अतः यह निष्कर्ष निकालना घटनाओं का अस्तित्व नहीं सर्वथा गलत होगा।

पुनर्जन्म सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति अपने वर्तमान जीवन के कर्मों के अनुरूप भविष्य जीवन में जन्म ग्रहण करता है। परन्तु व्यक्ति के मृत्यु के पश्चात एक जन्म के कर्मों का फल दूसरे जन्म में प्राप्त होगा अमान्य प्रतीत होता है। ऐसा मानने का अर्थ है मोहन के कर्मों का फल सोहन को भोगना होगा।

पुनर्जन्म सिद्धान्त की व्यवहारिक महत्ता है। समान परिस्थितियों में जन्म लेने के बावजूद व्यक्ति की स्थिति में अंतर है। इस अन्तर और विरोध का कारण पुनर्जन्म सिद्धान्त बतलाता है। इस प्रकार से पुनर्जन्म सिद्धान्त से मानव की स्थिति में विषमता की व्याख्या होती है। पुनर्जन्म सिद्धान्त भारतीय विचारधारा में अध्यात्मवाद का मूल बिन्दु है। जबतक कर्मवाद और आत्मा की अमरता का सिद्धान्त पर विश्वास किया जायेगा तबतक यह सिद्धान्त भी जीवित रहेगा।